E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 2 | February 2025

नई शिक्षा नीति 2020 तथा विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों में संबंध

नीतू [1], डॉ0 संजीव कुमार [2]
[1] शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर (उ0प्र0)

सार

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार द्वारा भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार और आधुनिकीकरण के उद्देश्य से लाई गई एक व्यापक नीति है। इसकी पृष्ठभूमि में भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था और वैश्विक परिदृश्य में तेजी से हो रहे बदलावों के साथ–साथ भारतीय शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों और अवसरों का गहराई से विश्लेषण शामिल है। विनोबा भावे एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता और आध्यात्मिक नेता थे। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके शैक्षिक विचारों को 'नई तालीम' या 'बुनियादी शिक्षा' के नाम से जाना जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थिनी द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों में संबंध पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

कुंजी शब्दः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विनोबा भावे, शैक्षिक विचार, बुनियादी शिक्षा, भारतीय शिक्षा प्रणाली

प्रस्तावना

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को लागू की गई एक व्यापक नीति है, जिसका उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली में सुधार करना और इसे 21वीं सदी की जरूरतों के अनुरूप बनाना है। यह नीति 1986 की शिक्षा नीति को बदलकर आई है और लगभग 34 साल बाद भारतीय शिक्षा में व्यापक बदलाव लाने का प्रयास करती है। नवीन शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला और आधुनिक बनाना और शिक्षा प्रणाली को रोजगारोन्मुख और ज्ञान आधारित बनाना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वी शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य दे के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह नीति भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए, 21वीं सदी की शिक्षा के शिए आकांक्षात्मक लक्ष्यों, जिनमें एसडीजी 4 शामिल हैं, के संयोजन में शिक्षा व्यवस्था, उसके नियमन और गवर्नेंस सहित, सभी पक्षों के सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव रखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीशत प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष बल देती है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्याज्ञान जैसी 'बुनियादी क्षमताओं' के साथ–साथ 'उच्चतर स्तर' की तार्किक और समस्या–समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आवश्यक है।

नयी शिक्षा नीति को सभी विद्यर्थियों के लिए, चाहे उनका निवास स्थान कहीं भी हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था उपलब्धि करानी होगी। इस कार्य में ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रह रहे समुदायों, वंचित और अल्प–प्रतिनिधित्व वाले समूहों परा विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत होगी। शिक्षा बराबरी सुनिश्चित करने का बडा माध्यम है और इसके द्वारा समाज में समानता, समावेशन और सामाजिक–आर्थिक रूप से गतिशीलता हासिल की जा सकती है। ऐसे समूहों के सभी बच्चों के लिए, परिस्थितिजन्य बाधाओं के बावजूद, हर संभव पहल की जानी चाहिए जिससे वे शिक्षा व्यवस्था में प्रवेश भी पा सकें और उत्कृष्ट प्रदर्शन भी कर सकें।

इन सभी बातों का नीति में समावेश भारत की समृद्ध विविधता और संस्कृति के प्रति सम्मान रखते हुए और साथ ही देश की स्थानीय और वैश्विक संदर्भ में आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए होना चाहिए। भारत के युवाओं को भारत देश के बारे में और इसकी विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, और तकनीकी

आवश्यकताओं सहित यहाँ की अद्वितीय कला, भाषा और ज्ञान परंपराओं के बारे में ज्ञानवान बनाना राष्ट्रीय गौरव, आत्मविश्वास, आत्मज्ञान, परस्पर सहयोग और एकता की दृष्टि से और भारत की सतत ऊंचाइयों की ओर बढ़ने की दृष्टि से अति आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विशेषताएं

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार द्वारा घोषित एक नई शिक्षा नीति है। यह नीति शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण बदलावों का प्रस्ताव करती है।

i. **लचीला पाठ्यक्रमः**
नई शिक्षा नीति में लचीला पाठ्यक्रम का प्रस्ताव किया गया है। इसके तहत विद्यार्थियों को अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार विषयों को चुनने की स्वतंत्रता होगी।
समग्र शिक्षाः नई शिक्षा नीति में समग्र शिक्षा पर बल दिया गया है। इसके तहत विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास पर ध्यान दिया जाएगा।

ii. **कौशल विकासः**
नई शिक्षा नीति में कौशल विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। इसके तहत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा, ताकि वे रोजगार के लिए तैयार हो सकें।

iii. **प्रौद्योगिकी का उपयोगः**
नई शिक्षा नीति में शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा दिया गया है। इसके तहत ऑनलाइन शिक्षा, ई–लर्निंग और अन्य डिजिटल उपकरणों का उपयोग किया जाएगा।

iv. **मूल्यांकन में सुधारः**
नई शिक्षा नीति में विद्यार्थियों के मूल्यांकन के तरीकों में सुधार करने का प्रस्ताव किया गया है। इसके तहत रटने की प्रवृत्ति को कम करने और समझ और अनुप्रयोग पर अधिक ध्यान देने की बात कही गई है।

v. **अनुसंधान और नवाचारः**
नई शिक्षा नीति में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए कई प्रावधान किए गए हैं। इसके तहत विश्वविद्यालयों में अनुसंधान और विकास केंद्रों की स्थापना की जाएगी।

vi. **समावेशी शिक्षाः**
नई शिक्षा नीति में समावेशी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है। इसके तहत सभी वर्गों के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान किए जाएंगे।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

1. **कुमार, एस., अंचल, ए., और वर्मा, एस. के. (2023)** यह शोधपत्र विनोबा भावे की शैक्षिक दृष्टि और शैक्षिक प्रणाली पर इसके गहन प्रभाव की जांच करता है। विनोबा भावे एक प्रमुख भारतीय समाज सुधारक, दार्शनिक और महात्मा गांधी के शिष्य थे। उनका शैक्षिक दर्शन समग्र विकास, नैतिक मूल्यों और पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान के एकीकरण पर केंद्रित था। यह अध्ययन भावे की शैक्षिक दृष्टि को आकार देने वाले दार्शनिक आधारों पर गहराई से विचार करता है, जो गांधीवादी सिद्धांतों, आध्यात्मिकता और आत्मनिर्भरता के महत्व से उनकी अंतर्दृष्टि पर आधारित है। भावे के शैक्षिक विचारों के व्यापक विश्लेषण के माध्यम से, यह शोध उनके व्यावहारिक कार्यान्वयन और भारत में शैक्षिक प्रणाली पर उनके प्रभाव का मूल्यांकन करता है। विनोबा भावे की शैक्षिक दृष्टि के दार्शनिक आधारों और प्रभावों की जांच करके, यह अध्ययन उनके विचारों और समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में उनकी प्रासंगिकता की गहरी समझ में योगदान देता है। **कुमार, डॉ. शर्मा (2019)** द्वारा आचार्य विनोबा भावे जी के दर्शन में शैक्षिक तत्वों की विवेचना पर एक अध्ययन प्रस्तुत किया था। सम्पूर्ण शोध प्रक्रिया एवं शोध ग्रन्थ पर एक गहन दृष्टिपात करने के उपरान्त शोधार्थी की यह धारणा है कि भारतीय शिक्षा जगत में पूजनीय आचार्य विनोबा भावे जी शिक्षा के आधार स्तम्भ के रूप में खड़े हैं। भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिकतम परिवर्तन लाने की सोच इनके मस्तिष्क में हमेशा बनी

रही। इसलिये इन्होंने भारतीय शिक्षा के प्रत्येक पहलू पर ध्यान केन्द्रित करके सुधार हेतु अपने विचार प्रकट किये। आचार्य विनोबा भावे जी ने तत्कालीन भारतीय शिक्षा को उपयोगी बनाने पर बल दिया है। उनकी धारणा थी कि जब तक बालक में सामाजिकता एवं त्याग की भावना का विकास नहीं होगा तब तक वे समाज के विकास में अपना सक्रिय योगदान नहीं दे सकेगें। **साहू, पटनायक और पात्रा (2019)** ने अपने शोध अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि स्वतंत्रता–पूर्व 19वीं सदी के अंत तक भारत की शिक्षा प्रणाली अच्छी नहीं थी। लेकिन यह 20वीं सदी के बाद यह अधिकतम सीमा तक विकसित हुई। विश्व की अन्य शिक्षा प्रणालियों की तुलना में अब समानांतर रूप से अच्छी स्थिति है।

अध्ययन के उद्देश्य

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन करना।
- विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों में संबंध

विनोबा भावे के शैक्षिक विचार

- **शिक्षा के उद्देश्यः**

विनोबा हमेशा ऐसी शिक्षा की आकांक्षा रखते थे जो सर्वोदय समाज के अनुरूप हो। उनका मानना था कि शिक्षा एक तरफ छात्र को आत्मनिर्भर, ज्ञान चाहने वाला और दूसरी तरफ स्वतंत्र विचारक बनाना चाहिए। साथ ही शिक्षा को छात्र को कर्तव्य के प्रति ईमानदार, विनम्र और समाज सेवा की आदत डालनी चाहिए। विनोबा का मानना था कि छात्र को हमेशा सक्रिय रहना चाहिए तभी वह ज्ञान प्राप्त कर सकता है और सत्य को प्राप्त कर सकता है।

- **शिक्षा का माध्यम**

विनोबा भावे के अनुसार, शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी ने समाज को शिक्षित और अशिक्षित में विभाजित कर दिया। वे शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के प्रबल समर्थक थे और उन्होंने सुझाव दिया कि बच्चों को सबसे पहले मातृभाषा ही पढ़ाई जानी चाहिए। उनका यह भी मानना था कि छात्रों में देशभक्ति के मूल्यों को विकसित करने के लिए हिंदी भाषा का ज्ञान दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हालांकि यह बहुत महत्वपूर्ण है कि बच्चे को अपने राज्य में बोली जाने वाली भाषा पढ़ाई जाए, लेकिन हमारी राष्ट्रीय भाषा एक अनिवार्य विषय होनी चाहिए और इसे बच्चों को शुरुआती कक्षाओं से लेकर अंत तक पढ़ाया जाना चाहिए।

- **व्यावहारिक शिक्षाः**

गांधीजी की तरह विनोबा का भी दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा प्रणाली को व्यावहारिक कार्यों से जोड़ा जाना चाहिए ताकि छात्रों को भविष्य में आजीविका कमाने के लिए ज्ञान मिल सके। उन्होंने शिक्षा के माध्यम के रूप में व्यावहारिक कला या शिल्प का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि एक बच्चा 5 साल की उम्र से पढ़ना शुरू करता है और बीस साल की उम्र तक अपनी पढ़ाई जारी रखता है। इतने सालों तक वह कोई काम नहीं करता। इस प्रकार वह व्यावहारिक जीवन जीने के लिए बिना किसी प्रशिक्षण के स्कूल से बाहर हो जाता है। विनोबा ने शिक्षकों से कृषि, बढ़ईगीरी, बुनाई या खाना पकाने आदि जैसे शारीरिक कार्यों के प्रति सम्मान पैदा करने को कहा।

- **नवी तालीमः**

वह शिक्षा जो पुराने सिद्धांतों को समाप्त कर विचारों और विश्वासों को नया निर्देश देती है, उसे नवी तालीम कहते हैं। इसकी मुख्य भूमिका तनाव को दूर करना है ताकि कड़ी मेहनत को शिक्षा का अहम हिस्सा बनाया जा सके। नवी तालीम का एक और उद्देश्य व्यक्ति को वास्तविक ज्ञान से जोड़ना और उस पर गर्व करने की भावना को समाप्त करना है जो लोगों को तमाम समस्याओं का सामना करने पर मजबूर कर सकती है। विनोबा भावे कहते हैं कि नवी तालीम का सिद्धांत यह है कि ज्ञान और कार्य दोनों एक ही चीज के रूप हैं और इसलिए ज्ञान–प्रक्रिया और कार्य–प्रक्रिया में अंतर करना असंभव है। नवी तालीम हर जगह एक जैसा रूप नहीं है। वास्तव में, इसके कई रूप हो सकते हैं और हमें वह रूप चुनना चाहिए जो जीवन के हर चरण को कवर करता हो।

- **पाठ्यक्रमः**

पाठ्यक्रम के संबंध में विनोबा भावे का मानना था कि इसे शारीरिक और मानसिक विकास के लिए बनाया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में शारीरिक व्यायाम शामिल होने चाहिए। गणित के पाठ भी केवल उसी स्तर तक पढ़ाए जाने चाहिए जो उसके व्यावहारिक जीवन के लिए आवश्यक हो। मधुर कविताएँ, पद और भजन उनकी वाक्–शक्ति के विकास के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा पाँचों इंद्रियों के विकास के लिए सहायक होनी चाहिए। इसके लिए उन्होंने त्रि–उद्देश्यीय कार्यक्रम का सुझाव दिया जिसमें उन्होंने शिक्षा को तीन भागों में विभाजित किया है। पहले भाग में उन्होंने सुझाव दिया कि बच्चों को प्रकृति और वर्तमान स्थिति से परिचित होना चाहिए। दूसरे भाग में बच्चों को आत्मनिर्भर बनना चाहिए और तीसरे भाग में उन्हें खुद को पहचानने में सक्षम होना चाहिए। दरअसल विनोबा किसी निर्धारित पाठ्यक्रम के समर्थक नहीं थे, बल्कि उन्होंने राष्ट्र और समाज की ज़रूरत के हिसाब से बदलाव का सुझाव दिया था।

नई शिक्षा नीति 2020 और विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों में संबंध

नई शिक्षा नीति 2020 में कई ऐसे प्रावधान हैं जो विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों से मिलते जुलते हैंः

- **श्रम और ज्ञान का समन्वयः** नई शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है। यह विनोबा भावे के श्रम और ज्ञान के समन्वय के विचार से मिलता जुलता है।
- **शिक्षा का माध्यम मातृभाषाः** नई शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर बल दिया गया है। यह विनोबा भावे के इस विचार से मिलता जुलता है।
- **शिक्षा का उद्देश्य आत्मनिर्भरताः** नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाने पर बल दिया गया है। यह विनोबा भावे के शिक्षा के उद्देश्य आत्मनिर्भरता के विचार से मिलता जुलता है।
- **शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण विकासः** नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का साधन माना गया है। यह विनोबा भावे के इस विचार से मिलता जुलता है।

निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 और विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों में कई समानताएं हैं। दोनों ही शिक्षा को एक महत्वपूर्ण साधन मानते हैं जो व्यक्ति और समाज के विकास में योगदान कर सकता है। नई शिक्षा नीति 2020 में विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों को शामिल किया जाना एक स्वागत योग्य कदम है। इससे शिक्षा को अधिक समावेशी, समग्र और रोजगारोन्मुखी बनाने में मदद मिलेगी।

शोध ग्रन्थ सूची

- पाल मनोज कुमार, डॉ. शर्मा अजय कुमार (2019), आचार्य विनोबा भावे जी के दर्शन में शैक्षिक तत्वों की विवेचना, इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेंट सोशियोलॉजी एंड ह्यूमैनिटी. वॉल्यूम.10 अंक–5, पृष्ठः 428–438
- बैरागी, वीणा (2015), ''हृदय जोडने वाला'', वाराणसी, सर्व सेवा संघ, प्रकाशन, वाराणसी।
- मीरा भट्ट (2015) '' विनोबा के जीवन प्रसंग'', वाराणसी, सर्व संघ, प्रकाशन, राजघाट।
- पचैरी, गिरिश (2015) '' भारतीय शिक्षा शास्त्री, मेरठः आर०लाल० बुक डिपो प्रकाशन।
- भावे विनोबा (2014) '' राम नामः एक चिन्तन'', वाराणसी, सर्व संघ, प्रकाशन।
- Kumar, S., Anchal, A., & Verma, S. K. (2023). Vinoba Bhave's Educational Vision: Exploring the Philosophical Foundations and Impact on the Educational System . *RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary*, *8* (11), 85–92. https://doi.org/10.31305/rrijm.2023.v08.n11.013